वरदानों की शक्ति

शिव भगवानुवाच :-

1. जैसे मैं इस ड्रामा को साक्षी होकर देखता हूं वैसे तुम भी देखो तो बाप समान बन जायेंगे।

2. स्वस्थिति श्रेष्ठ है तो परिस्थितियां बदल जायेगी, तुम्हारा कुछ नहीं नहीं बिगाड़ सकेंगी।

3. तुम सिर्फ मुझे याद करो, तुम्हारे लिये सोचने का काम भी मैं करूंगा।

4. तुम अपनी श्रेष्ठ पोजीशन में रहो तो कोई भी ऑपोजीशन कर नहीं सकता।

5. तुम अपने श्रेष्ठ स्वमान में रहो तो वहां हर गुण व शक्ति का नशा सदा इमर्ज रूप में रहेगा।

6. तुम्हारा सोचना, देखना सम्पूर्ण बनने का आधार है, तुम्हारी दृष्टि से आत्मायें और प्रकृति पावन बन रही है।

7. ज्ञानसूर्य से शक्ति लेकर सबको देना यह मुख्य सेवा है बाकी सेवायें तो निमित्त मात्र हैं।

8. स्वभाव में सरल और पुरुषार्थ में अटेन्शन रख चलो तो नम्बरवन में आ जायेंगे।

9. तुम बाप की याद में रहो तो प्रकृति विनाश के समय तुम्हारे समीप आकर एक फुट की दूरी पर रूक जायेगी।

10. जब तुम अपने आप को सम्पूर्ण रीति से जान जाओगे तो सम्पूर्णता को प्राप्त कर लेंगे।

11. तुम अपने को निमित्त समझकर चलो, जिम्मेवार मैं हूं - यह स्मृति सब जिम्मेवारियों से हल्का कर देगी।

12. यह सेवायें तो तुम्हें बिजी रखने के लिए हैं, तुम्हारा लक्ष्य तो स्वयं परिवर्तन से विश्व परिवर्तन करना है।

13. याद का बल उन बच्चों को मिलता है जो ऑनेस्ट हैं और जो सच्चे बाप से सच्चे होकर चलते हैं।

14. बाप अपने को निमित्त समझकर निश्चिन्त रहता है और बच्चे अपने को जिम्मेवार समझ कर परेशान रहते हैं।

15. सर्वस्व त्यागी बनो तो सरलता और सहनशीलता का गुण आ जायेगा।

16. जो बच्चे स्वमान की सीट पर सेट रहते हैं उनका जिम्मेवार बाप है, जो नहीं रहते उनके जिम्मेवार वे स्वयं हैं।

17. जितना बाप की याद में रहेंगे तो बाप के साथ का व बाप की छत्रछाया का अनुभव होता रहेगा।

18. जो त्यागी और तपस्वीमूर्त हैं भाग्य उनके आगे-पीछे दासी के समान आता है।

19. तुम सुख के सागर के बच्चे हो, तुम्हें संकल्प में भी दु:ख की लहर आ नहीं सकती।

20. बुद्धि रूपी विमान से सेकण्ड में वतन में पहुंच सर्वशक्तिमान बाप की किरणों का अनुभव करना ही शक्तिशाली योग है।

21. तुम कल्याणकारी बाप के बच्चे हो, स्वपन में भी तुम्हारा अकल्याण हो नहीं सकता।

22. तुम नॉलेजफुल आत्मायें संसार को रोशन करने वाले हो, तुम्हारे जीवन में एक सेकेण्ड भी अंधकार हो नहीं सकता।

23. तुम्हारे भाग्य का निर्माण स्वयं भाग्यविधाता ने किया है, भाग्यविधाता ही तुम्हारा हो गया है।

24. जो बच्चे परमात्म प्यार में खोये रहते हैं उन्हें संसार का कोई भी आकर्षण आकर्षित कर नहीं सकता।

25. जो आत्मायें बाप के नयनों में समाई रहती हैं माया की नजर उन पर पड़ नहीं सकती। ओम् शन्ति